राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–**pr.rajbhavan@gmail.com**
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि ग्रंथ –राज्यपाल

पटना, 25 नवम्बर 2019

''किसी भी प्रकार के धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन से हमारे भीतर आत्मबल विकसित होता है और सदाचार के पथ पर अग्रसर होने की हमें प्रेरणा मिलती है। पूरे समाज के लोग जब एक साथ एकत्रित होकर हृदय की शुद्धता, भक्ति, नैतिकता और मर्यादा आदि पर साधु–सन्तों के विचार सुनते हैं, तो उनके भीतर सत्यनिष्ठा, तपस्या, त्याग और बंधुत्व की भावना मजबूत होती है।''–उक्त उद्गार, महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान ने स्थानीय एस॰के॰ मेमोरियल हॉल, पटना में श्री प्रजापिता ब्रह्मकुमारी संस्था द्वारा आयोजित 'श्रीमद्भगवद्गीता महासम्मेलन' में मुख्य अतिथि के रूप में दीप–प्रज्ज्वलित कर उक्त कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये।

राज्यपाल श्री चौहान ने कहा कि कोई भी धर्म हो, सभी भाईचारा और प्रेम की ही शिक्षा देते हैं। 'धर्म' वही है जो धारण करने योग्य हो और धारण वही किया जा सकता है, जो समस्त मानवता के लिए कल्याणकारी एवं मंगलकारी हो। उन्होंने कहा कि समाज में समता हो, शांति हो, भाईचारा हो, प्रेम हो, सभी एक दूसरे के प्रति सम्मान और आदर का भाव रखें, सभी एक दूसरे के लिए त्याग और सहिष्णुता की भावना रखें –इन्हीं सब बातों से देश की एकता को ताकत मिलती है। राज्यपाल ने कहा कि कोई भी धर्म हो, सभी हमें अच्छा इंसान बनने की शिक्षा देते हैं। भारत एक ऐसा देश है, जहाँ सभी धर्मों के लोग रहते हैं। सभी धर्मों, सभी जातियों, सभी संस्कृतियों के सुन्दर सम्मिलन से ही भारत की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान और विरासत समृद्ध होती है। 'विविधता के बीच एकता' –हमारे देश की यही विशेषता है। हमारे देश का संविधान भी सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता की मूल अवधारणा पर जोर देता है।

राज्यपाल ने कहा कि 'गीता' के 18 अध्यायों के 700 श्लोकों में ज्ञान, कर्म, भक्ति, अध्यात्म, विज्ञान, व्यवहार, न्याय, शांति, समता –सब पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला गया है। यह किसी खास धर्म का ग्रंथ प्रतीत नहीं होती, इसके अध्ययन और मनन से सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। भगवद्गीता केवल सनातन धर्म या हिन्दू धर्म की एक ग्रंथ नहीं है, यह तो हर मानव जीवन, तन, मन, धन, संसाधन, संबंध और जिम्मेवारी प्रबंधन की उत्तम व्यावहारिक मार्ग–दर्शिका है, जो सभी जाति धर्म, वर्ण, देश और समय के लोगों के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं परम आवश्यक है।

आगे पृष्ठ...2 पर

राज्यपाल श्री चौहान ने कहा कि गीता की पूरे विश्व में विभिन्न भाषाओं में हजारों टीकाएँ लिखी गई हैं। यह ग्रंथ ज्ञान से ज्यादा कर्म की प्रेरणा देनेवाला ग्रंथ है। 'गीता' से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें फल से ज्यादा अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए। अच्छे कर्म करने पर ही अच्छे फल की प्राप्ति होती है। उन्होंने कहा कि महात्मा गाँधी जी ने 'गीता' का सार बतलाते हुए ही कहा था कि 'कर्म ही पूजा है।' हम अपने दायित्वों का ही अगर कुशलतापूर्वक निर्वहन करते हैं तो उससे अपने साथ–साथ दूसरे लोगों का भी बहुत कल्याण हो जाता है। भगवान कृष्ण ने 'गीता' में कहा है कि ''जब–जब विश्व में धर्म की ग्लानि होगी अर्थात् इसे क्षति पहुँचायी जायेगी, तब–तब मैं साधु पुरूषों और सज्जनों की रक्षा के लिए तथा दुष्टों के नाश के लिए आ जाऊँगा।'' इसका मतलब यही है कि संसार में धर्म–हानि और दुष्टों का आतंक ईश्वर को कदापि प्रिय नहीं है। गीता का यह संदेश मनुष्य को अहिंसा, शांति, समानता, प्रेम और सद्भावना की ही प्रेरणा देता है।

इस अवसर पर बिहार के माननीय उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, माननीय स्वास्थ्य मंत्री श्री मंगल पाण्डेय, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग के मंत्री श्री मदन सहनी, प्रजापिता ब्रह्मकुमारी संस्था की बहनें, योगी बृजमोहन सहित देश के विभिन्न हिस्सों से आये वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किये। उक्त कार्यक्रम में प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा महामहिम श्री चौहान को स्मृति–चिह्न एवं अंगवस्त्रम् भी भेंट किया गया। अवसर विशेष पर प्रजापिता ब्रह्मकुमारी संस्था की ओर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

.....